4

वर्तमान शैक्षिक परिवेश में जे. कृष्णमूर्ति के विचारों की उपादेयता

संध्या भान*

वर्तमान समाज के समक्ष मुख्य समस्याओं में महत्वपूर्ण है शिक्षा जगत की बढ़ती समस्याएँ। चाहे ये समस्याएँ संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास से जुड़ी हों या फिर मशरूम की तरह बढ़ते विद्यालयों की संख्याओं से जुड़ी हों। जहाँ एक ओर चिंता का विषय शिक्षा के स्तर तक था अब वह विद्यालयों के भीतर सुरक्षा तक भी आ पहुँचा है। प्रस्तुत लेख में जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा संबंधी विचारों को व्यक्तिगत विकास से जोड़कर दर्शाया गया है। लेख में वर्तमान शैक्षिक प्रणाली और विद्यालयों पर आलोचनात्मक प्रकाश डाला गया है। जे. कृष्णमूर्ति के शांति, संघर्ष, जीवन, कला और शिक्षा से संबंधित विचारों का अध्ययन इस लेख में प्रस्तुत है।

"जीवन को समझना स्वयं को समझना है और यही शिक्षा का आरंभ और अंत दोनों है।"

जे. कृष्णमूर्ति

जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन में स्वयं को समझना समस्त सभ्यताओं को समझने जैसा है क्योंकि सभी के भीतर संपूर्ण जगत सिमटा हुआ है। जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा-दर्शन में संपूर्णता है। जे. कृष्णमूर्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा के सही और पूर्ण अर्थ को विद्यालयों में स्थान देना रहा है। इस कार्य को उनके "प्रायोगिक खोज" के उपकरण के रूप में अभिव्यक्ति मिली। उन्होंने किसी दर्शन या धर्म को बढ़ावा नहीं दिया। जे. कृष्णमूर्ति ने रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी आज के समाज की समस्याओं, हिंसा, भ्रष्टाचार और मनुष्य की खोजों, सुरक्षा व सुख की बात की। उन्होंने मनुष्य को अपने डर, क्रोध, चोट और दुखों के बोझ से मुक्त होने पर चर्चा की। उन्होंने बेहद सटीकता व प्रायोगिकता से मनुष्य के दैनिक जीवन में गहरे ध्यान व आध्यात्मिकता की आवश्यकता को सूचीबद्ध किया।

जे. कृष्णमूर्ति के विचारों के अनुसार एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है। इसके साथ-साथ शिक्षकों का यह कार्य है कि वे विद्यार्थियों की क्षमताओं को पहचानने में और उन क्षमताओं को परिष्कृत करने में विद्यार्थियों का साहस बढ़ाएँ। धार्मिक व आध्यात्मिक खोज हर व्यक्ति की

---

* *रिसर्च स्कॉलर*, डिपार्टमेंट ऑफ़ साइकोलॉजी, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

व्यक्तिगत खोज है। उनके विचारों से ज्ञात होता है कि शिक्षा को आध्यात्मिक खोज के साथ सामंजस्य में होना चाहिए, आध्यात्मिकता आज की दुनिया की बहुत-सी कठिनाइयों का हल भी है। वे स्व-शिक्षा के द्वारा जागरूकता पर भी बल डालते हैं। साथ ही उन्होंने अपने संवादों व लेखों में जीवनपर्यंत व्यक्तित्व पूर्णता पर विशेष बल दिया है।

जे. कृष्णमूर्ति वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर आलोचनात्मक टिप्पणी करते हैं। जे. कृष्णमूर्ति शिक्षक व शिक्षार्थी के परस्पर गहरे संबंध को महत्व देते हुए एक ऐसी कक्षा की अवहेलना करते हैं जिसमें विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक हो। वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञान के अधिकतम भाग को नज़रअंदाज करते हुए केवल कुछ भाग को ही शिक्षा-शिक्षण में ला पाती है। यह शिक्षा मस्तिष्क की भी सीमित बुद्धि का उपयोग कर पाती है और सामंजस्यपूर्ण विकास और मानवता के गहरे आयामों के क्षेत्र में फीकी पड़ जाती है। मनुष्य जिसकी बुद्धि विकसित हो भी, तब भी वह एक रोबोट या कंप्यूटर की भाँति है, यदि उसके व्यक्तित्व में प्रेम की समझ न हो। शिक्षा किसी भी मनुष्य के भीतर विद्यमान कौशलों को प्रत्यक्ष करने का साधन व प्रक्रिया है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य है मनुष्य के भीतर श्रेष्ठ को उजागर करना। योग्य शिक्षा वही है जो विद्यार्थी की वृद्धि करे और स्वयं को समझने में विद्यार्थी को सक्षम बनाए।

शिक्षा का उद्देश्य

विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ ऐसा वातावरण बनाया जाए जिसमें बच्चे पूर्ण रूप से विकसित हों। इसका अर्थ यह हुआ कि बच्चों को ऐसे अवसर दिए जाएँ जिनसे उनकी अच्छाई का विकास हो ताकि वे लोगों, वस्तुओं और विचारों से सही तरीके से संबंध बना सकें। यदि उनमें सुंदरता, प्रकृति, संगीत और कला की समझ नहीं है तो किसी भी संबंध में कुछ भी सही नहीं हो सकता। हमें बहुत स्पष्ट रहना चाहिए कि हमें क्या चाहिए। एक मनुष्य को पूर्ण रूप से मनुष्य रहना चाहिए न कि केवल एक तकनीकी मनुष्य। यदि परीक्षाओं, तकनीकी जानकारी, बच्चे को चालाक बनाने पर ज़रूरत से ज़्यादा केंद्रित होकर और दूसरे पहलुओं को नज़रअंदाज़ करेंगे तो बच्चों का केवल अपूर्ण ही विकास हो पाएगा। जब एक संपूर्ण मनुष्य की बात करते हैं तो केवल आंतरिक समझ की बात नहीं करते, बल्कि एक ऐसे मनुष्य की बात कर रहे हैं जो कुछ नया खोजने के योग्य हो, जो स्वयं की आंतरिक स्थिति को जाँच सके और कोई ऐसा जो बाहरी रूप से कार्य करने में भी कुशल हो। आंतरिक और बाह्य दोनों में संतुलन ही संपूर्ण विकास के लक्षण हैं। विद्यालयों को यह लक्ष्य रखना चाहिए कि जब बच्चा विद्यालय से बाहर जाए तो वह एक ऐसा व्यक्ति हो जो समाज की चुनौतियों का सामना करने योग्य हो न कि केवल एक असहाय मनुष्य।

सुनना और सीखना

जे. कृष्णमूर्ति के अधिकांश विचार उनके संवादों से मिलते हैं जो उन्होंने लगभग हर आयु समूह के साथ किए। इन संवादों के दौरान कई बार जे. कृष्णमूर्ति सुनने के कौशल और असल सीखने की बात करते हैं। 'संप्रेषण' विचार को सुनना, समझना और कहने की कला है। इनमें से किसी भी चरण में चूक वार्तालाप

को भटका सकती है। समझना केवल बौद्धिक स्तर का कार्य है। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार इस संकल्पना में सुनना और सीखना भी महत्वपूर्ण है।

सुनने की क्रिया में विधि या 'कैसे' सुना जाए यह महत्वपूर्ण है। सामान्यत: जब हम सुनते हैं तब हमारे अनुभव, मत, विचार और पक्षपात सुनने में अवरोध पैदा करते हैं। जब हम किसी को सुनते हैं तब हमारे भूतपूर्व 'चित्र' (जो हमारी बनाई हुई सीमित समझ है) हमारे सुनने को प्रभावित करके, उस विचार का अर्थ हमारी पृष्ठभूमि के अनुसार बदल देती है। यथार्थ में सुनना केवल मौन में ही संभव है। मौन के बारे में जे. कृष्णमूर्ति ने कहा है कि यह मस्तिष्क एकाग्र होता है। असली संवाद तभी संभव है जब मौन है। सीखना विचारों का आदान-प्रदान भर नहीं है। सीखना तब संभव होता है जब संवाद हो, जब हृदय और मस्तिष्क संपूर्णता से इस क्रिया में सम्मिलित हों। केवल तभी बिना किसी अवरोध के सुन पाते हैं। श्रोता और विद्यार्थी केवल तभी सत्य और असत्य क्या है, ये समझ पाते हैं।

शिक्षा एवं जीवन का महत्त्व

विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करने पर ज्ञात होता है कि मानव व्यवहार कितना समान है। चाहे वह दिल्ली, महाराष्ट्र या चेन्नई हो या फिर भारत, अमेरिका या रूस। हर मनुष्य जीवन में सुरक्षा और स्थायित्व चाहता है। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार रुढ़िवादी-शिक्षा स्वतंत्र चिंतन को कहीं अधिक कठिन बना देती है। जो सभी कर रहे हैं और जो सामान्यीकृत हो चुका है उसे अपनाने में कोई कठिनाई नहीं होती, परंतु जो सबसे अलग है, जिसके बारे में कम ज्ञात है उसे अपनाना कठिन है। यह कठिनाई ही मानस में भय पैदा करती है, जिस भय के चलते व्यक्ति कुछ करने से पहले ही उसे छोड़ चुका होता है। भय जीवन की बौद्धिक समझ को रोक देता है। जैसे-जैसे समय बीतता है हृदय और मस्तिष्क में मंदता घर करती जाती है।

संघर्ष दो तरीके का होता है। जे. कृष्णमूर्ति कहते हैं कि एक संघर्ष हिंसक है जो केवल क्रिया मात्र होता है। इस संघर्ष में समझ का अभाव होता है और यह वर्तमान विचारधारा के विरुद्ध होता है। इस प्रकार के संघर्ष में व्यक्ति एक विचारधारा के विरुद्ध, एक समूह के विरुद्ध अन्य विचारधारा, अन्य समूह में खड़ा होता है। इस प्रकार एक रूढ़िवाद से निकलकर, दूसरे रूढ़िवाद में जा मिलता है। एक दूसरे प्रकार का संघर्ष है बौद्धिक संघर्ष। यह प्रतिक्रिया नहीं है। यह स्वज्ञान से, अपनी सोच और अनुभूतियों की चेतना से आता है। यह केवल तभी आता है जब अनुभव करते हैं न कि आराम पाने के लिए कठिनाइयों से बचते हैं। अपनी बुद्धि को उच्च स्तर पर जाग्रत रखकर ही ऐसा कर पाते हैं। इसी से जीवन में सही मार्गदर्शन आता है। जे. कृष्णमूर्ति आगे पूछते हैं कि जीवन का महत्व क्या है? हमारा जीवन और संघर्ष क्या है? यदि हम केवल अच्छे अंकों, अच्छी नौकरी और दूसरों पर प्रभाव देखने के लिए शिक्षित हो रहे हैं तो हमारा जीवन खोखला और खाली होगा। अधिकतर शिक्षक और अभिभावक असंतोष और जीवन की कठिनाइयों से डरते हैं, इसलिए वे विद्यार्थियों को अच्छी नौकरी, शिक्षा और अंतत: एक सुरक्षित जीवन का सुझाव और दबाव बनाते हैं। इन कठिनाइयों को ही जे. कृष्णमूर्ति ने स्वतंत्रता का साधन माना है। यदि इन कठिनाइयों का

बिना किसी पक्षपात, बिना किसी भावात्मक प्रभाव के और बिना किसी रूढ़िवाद प्रभुता की छाया के अवलोकन किया जाए तब इन कठिनाइयों को समझकर इन्हें हल करने का उपाय मिल सकता है। जाँच करना स्वतंत्रता की ओर पहला कदम है।

वर्तमान विद्यालय, शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक संरचना व्यक्ति को स्वतंत्र होने में कोई खास सहायता नहीं करते। विद्यार्थियों के सम्यक विकास के लिए ऐसे विद्यालयों की रचना की जानी चाहिए, जहाँ सही प्रकार के शिक्षक व शिक्षाविद् हों। घर के प्रभाव और विद्यालय के प्रभाव में परस्पर विपरीत संबंध नहीं होना चाहिए, इससे विद्यार्थी के भीतर एक अंतहीन संघर्ष का जन्म होता है। यह संघर्ष गलत प्रकार की शिक्षा के द्वारा जन्म लेता है और विद्यमान भी रहता है। विद्यार्थी के भीतर बहुत पहले ही यह विभाजन पैदा कर दिया जाता है जो व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर घातक है। यदि हमें ऐसे ही कई मुद्दों में दिलचस्पी है तो हमें शिक्षा की सही संकल्पना पर जे. कृष्णमूर्ति के विचारों को समझने का प्रयास करना होगा।

शिक्षा और शांति

शांति को समझने से पूर्व हमें अशांति या संघर्ष को समझना ज़रूरी है क्योंकि इनके बिना शांति को समझना कठिन है, क्योंकि अशांति और संघर्ष हमारे जीवन में अधिक दिखाई पड़ते हैं। ये हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

संघर्ष हमारे मूल्यों, लोगों, संपत्ति और विचारों के साथ गलत संबंधों का परिणाम है। समाज के ढाँचे का स्वरूप ही एकांकी करने वाला बन चुका है। प्रत्येक के साथ हम अपने अहम को जोड़ते हैं। संघर्ष का एक अन्य कारण है 'निर्भरता'। यह निर्भरता वयस्कों, वस्तुओं, धार्मिक गुरुओं किसी पर भी हो सकती है। जब हम किसी पर निर्भर होते हैं तब हम समझना और सोचना बंद कर देते हैं। सोच-समझ की जगह भय, अनुपालन और निर्दयता ले लेते हैं। 'शांति' जिसकी खोज स्वयं में की जानी चाहिए उसे व्यक्ति समाज, संस्था व अधिकारियों में खोजने लगता है। यदि हम स्थिति में सुधार चाहते हैं तो हमें स्वयं को समझने की शुरुआत करनी होगी। अपनी सोच, कार्यों, अनुभूतियों के बारे में सचेत होकर ही स्वयं को समझना और शांति धारण करना संभव है।

यदि हम एक ऐसा समाज चाहते हैं जहाँ पक्षपात, अहंकार से जन्मी कठिनाइयाँ, अहिंसा, शोषण न होकर शांति, प्रेम और खुशियाँ हों तो हमें ऐसे शिक्षक चाहिए जो सम्यक और संतुलन को समझते हों और जो ये समझ विद्यार्थियों को दे सकते हों। जे. कृष्णमूर्ति कहते हैं कि ऐसे शिक्षक समाज की कुव्यवस्थाओं के लिए खतरा होंगे जो शोषण, हिंसा, पक्षपात के विरुद्ध खड़े हैं। इसी कारण ऐसे शिक्षकों को विरोध, नकारात्मक अनुभवों आदि का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में अधिकतर शिक्षक समझौता कर लेते हैं और शोषण तथा हिंसा की वर्तमान प्रणाली को बनाए रखते हैं। अवश्य ही संपूर्ण शांति के लिए हमारे भीतर और बाहर दोनों जगह शांति और स्वतंत्रता का होना ज़रूरी है। तभी सत्य की खोज संभव है। आंतरिक अशांति, भय और सीमाएँ ही हम बाह्य जगत में प्रक्षेपित करते हैं जो सामाजिक संघर्ष बन जाता है।

विद्यालय

स्वतंत्रता एकांत में नहीं समाज में रहकर आती है। सही प्रकार की शिक्षा का संबंध व्यक्तिगत स्वतंत्रता है, केवल यह स्वतंत्रता ही सही सहयोग लाती है परंतु यह स्वतंत्रता स्वयं के अभ्युदय और सफलता के लक्ष्य से आती है। स्वतंत्रता स्व-ज्ञान से आती है। जब बुद्धि का विकास होता है और बुद्धि अपने ही द्वारा बनाई कमज़ोरियों और रुकावटों को पार करती है तब यह स्वतंत्रता आती है।

यह शिक्षा का कार्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी बुद्धि की क्षमताओं को पाने और उसकी रुकवटों को पार करने में सहायता करे। शिक्षा का यह कार्य नहीं है कि नयी-नयी रुकावटों और सीमाओं में बुद्धि को बाँधे। इस प्रकार की शिक्षा विद्यार्थियों की बुद्धि स्फूर्ति, रचनात्मक समझ को जाग्रत न करके उसे और दूषित ही करेगी। एक विद्यालय जो समाज के दृष्टिकोण से एक "सफल-विद्यालय" है, ज़रूरी नहीं एक अच्छा शैक्षिक-केंद्र भी हो।

कला, सौंदर्य और सृष्टि

कला स्वयं की अभिव्यक्ति भी है और स्वयं से छिपना भी। स्वयं से भागना कला के जरिए आसान और सम्मानजनक तरीका है। जब हम किसी भी तरीके से स्वयं से भागते हैं, तब हम उस तरीके के आदी हो जाते हैं, वह चाहे कला हो, मादक पदार्थ हो या धार्मिक कर्मकांड हो। किसी व्यक्ति, कविता, कला पर अपने स्वार्थ के लिए निर्भर होना केवल संघर्ष को और बढ़ाना है। जिस मन में संघर्ष है वह सृष्टि का सही अर्थ नहीं समझ सकता। शिक्षा ऐसी हो जो ऐसे व्यक्तियों के इन संघर्षों को समझने में मदद करे और संघर्ष की इस स्थिति से बाहर आने पर मिलने वाली सृष्टि की स्थिति को बढ़ावा दे।

जीवन से परे कला का कोई मुख्य महत्त्व नहीं है। जब कोई चित्र, कविता या कहानी या संगीत दैनिक जीवन से कोई संबंध न रखकर केवल स्वयं से भागने में मदद करने वाला एक तरीका हो, तब वह कला जीवन से नकारात्मक संबंध रखती है। ऐसी कला हमारी सम्यक अभिव्यक्ति नहीं है।

जब हम स्वयं से परिचित होंगे, अपनी कमियों, खालीपन से परिचित होंगे, जब हम पूर्णत: खुले, संवेदिक होंगे केवल तभी हम सृष्टि हो सकते हैं। केवल तभी हम सृष्टि के आनंद को अनुभव कर सकते हैं। स्वयं को बिना जाने बाहरी समझ संभव नहीं है, ऐसी अधूरी समझ दुख और विनाश की ओर ही ले जाती है।

जे. कृष्णमूर्ति के विचारों की जीवंत कार्यशालाएँ

वर्तमान समय में भारत में जे. कृष्णमूर्ति के विचारों पर आधारित कई केंद्र हैं, जिनमें ऋषि वेल्ली, आंध्र प्रदेश; राजघाट शिक्षा केंद्र, वाराणसी; बैंगलोर शिक्षा केंद्र, बेंगलुरू; दी स्कूल—के. एफ. आई. चेन्नई; सहयाद्रि स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र; बाल-आनंद, मुंबई और दी पलर सेंटर फ़ॉर लर्निंग—के.एफ.आई., तमिलनाडु मुख्य हैं। इनके अलावा इंग्लैंड में ब्रोकवूड पार्क स्कूल और अमेरिका में ओक ग्रोव स्कूल भी स्थित हैं। ऋषि वेल्ली स्कूल को तो पक्षी अभ्यारणय घोषित किया जा चुका है क्योंकि यहाँ के प्राकृतिक वातावरण में कई प्रकार के पक्षियों की प्रजातियाँ देखी जा सकती हैं। यदि हम जे. कृष्णमूर्ति के विचारों के औचित्य की बात करें तो आइए शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षा प्रणाली की बात करें।

विद्यार्थी

जे. कृष्णमूर्ति के अधिकतर विद्यालयों में विद्यार्थियों और शिक्षकों के वहीं रहने की व्यवस्था की जाती है। विद्यार्थी और शिक्षक में इस प्रकार न केवल कक्षा का संबंध होता है अपितु कक्षा के बाहर भी वे विभिन्न संदर्भों में मिलते और जुड़े रहते हैं, जैसे— भोजन के लिए, भ्रमण के समय, यात्रा के दौरान, आवास में आदि। विद्यार्थियों की अन्य क्रियाओं में प्रकृति से जुड़ी क्रियाओं को अधिक प्रचारित किया जाता है। विद्यार्थी चाहे तो पक्षी देखने की क्रिया में औपचारिक रूप से शामिल हो सकते हैं। इन विद्यालयों में सामान्य ज्ञान कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को आस-पास के खेती, किसानों, चरवाहों और दैनिक भाड़ा कमाने वालों से संबंध बनाने के अवसर भी दिए जाते हैं। विद्यार्थियों को विज्ञान के प्रयोग इस तरह के दिए जाते हैं जिनमें उन्हें अपने वातावरण में पाए जाने वाले पौधों, वृक्षों, जीव और जलवायु का अवलोकन करके सीखना हो। इस तरह विद्यार्थियों के अंदर निम्नलिखित गुण जाग्रत करने चाहिए—

1. विद्यार्थियों को शिक्षित करना ताकि वे दुनिया एवं अपने अंदर की दुनिया को जान सकें।
2. विद्यार्थियों में प्रकृति एवं जीवन के सभी रूपों के लिए प्रेम जगाना।
3. भय के बिना स्नेह, स्वतंत्रता व संतुलन के वातावरण को स्थापित करना।
4. विद्यार्थियों को किसी विशिष्ट धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा से प्रभावित होने से बचाना ताकि उनके मस्तिष्क आधारभूत प्रश्नों को पूछने के लिए स्वतंत्र रह सकें।

शिक्षक

शिक्षक न केवल कक्षा में शिक्षण तक सीमित होकर अपने संपूर्ण जीवन से विद्यार्थियों को प्रभावित करते हैं बल्कि शिक्षक के व्यक्तित्व का संपूर्ण होना और आवश्यक हो जाता है। इस स्तर पर लक्ष्य यह है कि शिक्षकों को किस तरह ज्ञान और परिप्रेक्ष्य की दृष्टि और अधिक कुशल बनाया जा सके। यह उद्देश्य निम्न रूपरेखा ले सकता है—

1. वर्तमान शैक्षिक मुद्दों को पेश करना व चर्चा करना।
2. शिक्षकों द्वारा अच्छे साधनों और क्रियाओं का आदान-प्रदान करना।
3. शिक्षा संबंधी लेखों को पढ़ना और उन पर चर्चा करना।
4. विद्यालय में शिक्षक विकास कार्यक्रम करवाना।
5. शिक्षकों के लिए कार्यशाला कराना।
6. शिक्षकों के लिए छोटे-छोटे कोर्स कराना।
7. पाठ्यक्रम विकास प्रोजेक्ट्स करना।

ऋषि वेल्ली विद्यालय अपने नए शिक्षकों को जे. कृष्णमूर्ति के विचारों और दर्शन से अवगत कराने के लिए उचित कार्यक्रम कराते हैं। यहाँ के अधिकतर अध्यापक निरंतर चलने वाले इस प्रयत्न में शामिल रहते हैं।

इसी प्रकार निरंतर किए गए प्रयासों द्वारा शिक्षकों को जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा संबंधी विचारों को कैसे शिक्षा-शिक्षण में लाया जाए, उसके लिए तैयार किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

जे. कृष्णमूर्ति शिक्षा के विकास के लिए एक ऐसी शिक्षण प्रणाली को सहमति देते हैं जहाँ बच्चे और समाज के बीच सकारात्मक लेन-देन हो। व्यक्ति के आंतरिक द्वंद्वों को सुलझाने के लिए उन्हें विद्यालयों से उचित कौशल मिलने चाहिए। विद्यालय केवल अक्षर ज्ञान के लिए न होकर संपूर्ण व्यक्तित्व के संभावित विकास के लिए हों। जीवन के हर पहलू चाहे वे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक या भावात्मक हों, सभी के लिए सहायक शिक्षा ही असल शिक्षा है।

संदर्भ

जे. कृष्णमूर्ति. 1969. *फ्रीडम फ्रोम दी नोन.* जे. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, इंग्लैंड.

——. 1973. *दी फ़र्स्ट स्टेप इज़ दी लास्ट स्टेप.*जे. कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, इंग्लैंड.

——.1973. *बियोंड वोइलेंस.* कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, इंग्लैंड.

——. 1977. *ऑन एजुकेशन.* हार्पर एंड रॉ, न्यूयॉर्क.

——. 1995. *ऑन फ़ियर.* कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, इंग्लैंड.